डॉ. अनुजा बेगम

गुवाहाटी
असम

मेले की साड़ी

एक शांत और हरे-भरे छोटे से गांव में, एक बूढ़ी औरत अपने एकमात्र बेटे के साथ रहती थी।

घर गांव के बाहरी इलाके में स्थित था, जो हरे-भरे खेतों और बहती हुई नदी से घिरा हुआ था। घर के अंदर एक छोटा सा प्रवेश द्वार था जो एक मामूली बैठक के कमरे की ओर जाता था। कमरा सरल और आरामदायक था, जिसमें कुछ लकड़ी के फर्नीचर और दीवारों पर कुछ पुराने पारिवारिक चित्र थे। उस कमरे के कोने में एक पुरानी कुर्सी थी जहाँ बैठकर बूढ़ी औरत हाथ से सिलाई करती और कभी - कभी अपने बेटे की कहानियाँ सुनती थी।

बैठक के कमरे से एक छोटा सा रसोईघर था जहाँ बूढ़ी औरत खाना बनाती थी। रसोईघर छोटा और साफ-सुथरा था, जिसमें एक छोटा-सा ओवन और कुछ बुनियादी बर्तन थे। एक लकड़ी की अलमारी में सामान रखी जाती थी।

रसोईघर के बगल में दो छोटे कमरे थे। एक में बूढ़ी औरत सोती थी, जबकि दूसरे में उसका बेटा रहता था। दोनों कमरे सादे थे, जिनमें एक पलंग, एक छोटी मेज और कुर्सियाँ थीं।

घर के पीछे एक छोटा सा बगीचा था जहाँ बूढ़ी औरत सब्जियाँ उगाती थी। सब्जियाँ बेटे और माँ द्वारा खाए जाने के लिए पर्याप्त थीं, और वे कभी-कभी उन्हें गाँव के बाजार में बेच देते थे। बगीचे में कुछ फलदार पेड़ भी थे, जो गर्मियों में स्वादिष्ट फल देते थे।

बूढ़ी औरत, जिसका नाम सुमन था,अब बीमार पड़ गया और चल फिर नहीं सकती थी। ज़िंदगी की थकान और बीमारी ने उसे कमज़ोर कर दिया था।

उसके हाथ अब बगीचे में काम करने में असमर्थ थे । हर दिन उसके लिए एक संघर्ष बन गया था।

उसका बेटा, राम, एक मेहनती किसान था और अपने परिवार को पालने के लिए दिन -रात मेहनत करता था। वो अपनी माँ को सबसे ज़्यादा पसंद करता था और उसके लिए हर वह काम करता था जो वो कर सकता था। लेकिन, गांव में हल चलाने, फसल काटने, और घर का खर्च चलाने की ज़िम्मेदारी राम के कंधों पर थी। उसकी माँ की देखभाल के लिए उसके पास समय कम ही बचता था।

एक दिन, राम घर लौटा और उसने अपनी माँ को बिस्तर पर पड़ी देखा। उसकी आँखों में दर्द और निराशा थी। उसका दिल टूट गया। उसने अपनी माँ को गले लगाया और उसे शांत किया। वह समझ गया कि अपनी ज़िंदगी की दौड़ में वह अपनी माँ की ज़रूरतों को दरकिनार कर रहा था। उसकी माँ को उसकी ज़रूरत थी, उसका प्यार, उसकी देखभाल। उसने तय किया कि अब से वो खुद को अपनी माँ के लिए समर्पित करेगा। राम ने खेतों में काम करने का समय कम कर दिया। उसने अपनी माँ के लिए खाना बनाना, उसे नहलाना, उसके लिए दवा लाना, और उसे हर तरह से खुश रखने की कोशिश की। धीरे-धीरे, उसकी माँ का स्वास्थ्य सुधरने लगा। उसकी आँखों में फिर से चमक आ गई, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। राम को अपनी माँ की खुशी देखकर खुशी हुई। उसने महसूस किया कि सच्चा सुख अपनी माँ की सेवा में है। उसने अपनी माँ को अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा उपहार माना और उसके साथ समय बिताने के हर पल को संजोकर रखा।

एक दिन, राम के एक मित्र ने उसे यह खबर दी कि शहर में एक विशाल मेला लगा हुआ है। मेले में शहर भर से दुकानदार आए थे, जो अपने बेहतरीन सामानों को बेच रहे थे। राम को पता था कि उसकी माँ को एक नई साड़ी की ज़रूरत है, और मेला एक आदर्श अवसर था जहाँ से उसे एक अच्छी साड़ी मिल सकती थी। मन में उत्साह से भरकर, राम ने अपने काम से छुट्टी ली और मेले की ओर चल पड़ा। जब वे मेले में पहुँचे, तो उनके मन में एक

अजीब सी खुशी छा गई।हर तरफ हलचल थी, लोग इधर-उधर भाग रहे थे, दुकानों पर तरह-तरह के सामान सजे हुए थे। राम के कान में गाने, हँसी और बाजार की शोर धुम मचा रही थी।

उन्होंने देखा कि मेला दो हिस्सों में बँटा हुआ है। एक तरफ कपड़े, गहने, खिलौने और मिठाइयाँ बिक रही थीं, तो दूसरी तरफ झूले, चरखी और घोड़े की सवारी थी। राम सबसे पहले कपड़े की दुकानों पर गए। वहाँ हर तरह के कपड़े थे - रेशमी, सूती, सिल्क, और रंगों का ऐसा समंदर था कि देखने में ही आँखें भर गईं।

राम अपनी मां को ध्यान में रखते हुए साड़ियों की दुकानों पर जाने लगे। वहाँ उन्होंने कई खूबसूरत साड़ियाँ देखीं, जिनमें से कुछ तो इतनी सुंदर थीं कि उनका मन उन पर टिक गया।

लेकिन राम जानते थे कि उनकी मां को ज़्यादा रंग-बिरंगे कपड़े पसंद नहीं हैं। इसलिए उन्होंने एक हल्के गुलाबी रंग की साड़ी देखी, जिस पर छोटे-छोटे फूलों का काम था। साड़ी इतनी खूबसूरत थी कि राम का मन उस पर मँडराने लगा। उन्हें यकीन हो गया कि उनकी मां इस साड़ी को बहुत पसंद करेंगी। राम हँसते हुए दुकानदार से साड़ी खरीद ली और फिर मेले में घूमते हुए कुछ मिठाइयाँ और भोजन सामग्री खरीद ली।

मेले से लौटते वक्त, राम ने रास्ते में एक बूढ़े आदमी को देखा। उम्र की हद पार कर चुके उस बूढ़े आदमी का शरीर हड्डियों का ढांचा था, उसकी आँखें दुख और भूख से लाल थीं। कई दिनों से भूखा, वह आदमी बेबस और निराश था। राम को उस बूढ़े व्यक्ति की दयनीय स्थिति को देखकर दुख हुआ । उसके हृदय में करुणा की लहर उमड़ पड़ी। उसी क्षण, उन्होंने अपने साथ लिए हुए खाने-पीने की चीजों को उस बूढ़े आदमी के सामने रख दिया। राम ने उस आदमी को पहले पानी पिलाया और फिर अपने साथ लाये हुए मिठाई और रोटी उस आदमी को दी। भूख से व्याकुल बूढ़ा आदमी ने स्वादिष्ट भोजन का स्वाद लिया। भूख मिटने के बाद, बूढ़ा आदमी राम के प्रति आभार व्यक्त कर रहा था। उसने राम की प्रशंसा की और कहा कि उसकी दया ने उसे नई जीवन

शक्ति प्रदान की है।

राम ने उस बूढ़े आदमी से बात की, उसकी पीड़ा सुनी और उसे सांत्वना दी। राम की दया और करुणा देखकर बूढ़े आदमी को मानो नया जीवन मिल गया ।

तत्पश्चात्,राम घर की ओर रवाना हुए । सबसे पहले राम अपनी माँ के पास गया और रास्ते में मिले बूढ़े आदमी की बातें सुनाई । मां को बहुत खुशी हुई । राम ने फिर अपने जीवन की सबसे कीमती स्नेहोपहार वह गुलाबी रंग की साड़ी मां को भेंट की। यह देख, माँ बहुत खुश हुई और अपनी आँखों में आँसू के साथ राम को गले लगाया। यह साड़ी माँ-बेटे के अटूट बंधन का एक अमूल्य प्रतीक बन गई, जो बीमारी के सबसे कठिन समय में भी अटूट रहा था।